विचार बिन्दु

नशे की हालत में क्रोध की भांति, ग्लानी का वेग भी सहज ही बढ़ जाता है।
–प्रेमचंद

डिजिटल प्रौद्योगिकी ने बदला फिल्में देखने का तरीका

कोरोना महामारी से उबरने के बाद सिनेमाघर पूरी क्षमता के साथ फिर से खुल गये हैं। ऐसी खबरें भी आने लगी हैं कि कुछ फिल्मों ने सैकड़ों–करोड़ों का व्यापार किया है। हिंदुस्तान के लोगों में सिनेमा हमेशा ही एक सनक की तरह रहा है। एक लंबा समय ऐसा भी गुजरा है जब सिनेमा देखना एक पूरी पीढ़ी के लिए जुनून था। सिनेमा हमारे यहां मनोरंजन का एक बेहद लोकप्रिय जरिया भी रहा है। इसीलिये भारत दुनिया के उन चंद देशों में शामिल हैं जहां सबसे अधिक संख्या में फिल्में बनती और प्रदर्शित होती रही है। लेकिन बदले ज़माने में सिनेमाघर में जाकर फिल्म देखने वाले पुराने जुनूनी दर्शक क्या अब बचे भी हैं? वे जमाने गए जब फिल्में आठ सौ से बारह सौ सीटों की क्षमता वाले सिनेमाघरों में सौ–सौ दिन चलती थी, सिल्वर, गोल्डल और प्लेटिनम जुबलियां मनाती थीं। फिल्मों के नये वितरण के आर्थिक मॉडल में इन दिनों तो डेढ़–दो सौ सीटों वाले मल्टीप्लेक्सों में तीन दिन से एक हफ्ते चली हुई फिल्म सुपर हिट का दर्जा पा जाती है। पहले दस–बारह हफ्ते चलने के बाद फिल्मों का ऐसी हिट होने का पता चलता था। सिनेमाघरों के बिकने वाले टिकटों और गानों के रिकॉर्ड की बिक्री के अलावा फिल्म निर्माताओं की आय का और कोई साधन नहीं होता था। सिनेमाघरों के टिकटों पर सौ प्रतिशत तक मनोरंजन कर का भी अलग से बोझ होता था। तब दर्शक अपनी पसंदीदा फिल्म को बार–बार देखने सिनेमाघर में टिकट खरीद कर जाते थे। किसी फिल्म का हिट होना उसकी रिपीट वैल्यू पर निर्भर करता था। अब कहां रहे वैसे दर्शक जो गर्व से बता सकें कि उन्होंने अमुक फिल्म बीस बार देखी है। अब कौन किसी फिल्म को बार–बार देखता है! नई डिजिटल यंत्र तकनीक और व्यावसायिक मॉडल ने सब कुछ बदल दिया है।

ऐतिहासिक रूप से, फिल्म निर्माता अपनी नई फिल्में उन सिनेमाघरों में दिखाते रहे जिन्हें नई शब्दावली में 'एकल स्क्रीन' कहते हैं। एकल स्क्रीन का ज़माना गया और मल्टीप्लेक्सों का ज़माना आया। अब मल्टीप्लेक्सों की जगह चलचित्रों का प्रदर्शन अंतर्जाल के स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्मों पर स्थानांतरित होने लगा है। फिल्मों के ऑनलाइन प्रदर्शन की उभरती नई डिजिटल तकनीक को कोविड महामारी के लॉकडाउन के दौरान बड़ी सफलता मिली क्योंकि दो वर्षों तक घरों में बंद लोगों के लिए मनोरंजन यही एक माध्यम रहा। जब हालात सामान्य हुए और लॉकडाउन खुला तब तक बहुतों की सिनेमा देखने की आदतें बदल गई। स्मार्टफोन पर फिदा नई पीढ़ी के लिए सिनेमाघरों में जाना घर से निकल कर बाहर कुछ खाना–पीना और मौज मस्ती करना हो गया। पहले दर्शक फिल्म देखने के लिए फिल्म देखते थे। अब सोचते हैं कि चलो शॉपिंग करने निकले हैं, खाने–पीने निकले हैं तो फिल्म भी देख लेते हैं। उनके लिए फिल्म देखने और पॉपकार्न खाने में कोई फर्क नहीं होता। ऐसे दर्शको को सोशल मीडिया तथा अन्य माध्यमों के जरिये घनघोर प्रचार से फिल्म देखने के लिए खींचा जाता है और उन्हीं से फिल्म को हिट करवाने के प्रयास होते हैं। इसीलिए आजकल की बड़ी–बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्मों से भी दर्शक जुड़ा हुआ महसूस नहीं करते जैसा पहले की हिट फिल्मों के साथ होता था और वे अपनी पसंदीदा फिल्म बार–बार देखते थे। बड़ी कमाई करने वाली किसी फिल्म का एक भी दृश्य किसी को याद नहीं आता। फिल्में पैसे तो खूब कमा रही हैं लेकिन लोग थिएटर से निकलते ही उन्हें भुला देते हैं। कोई नई ब्लॉकबस्टर क्या क्लासिक का दर्जा पा सकती है, यह सवाल भी पूछा जा सकता है।

अब तो मल्टीप्लेक्स भी परेशानी में हैं क्योंकि डिजिटल तकनीक ने दर्शकों को ऑन लाइन प्लेटफ़ॉर्म ओटीटी का माध्यम उपलब्ध करा दिया है जिसका मुकाबला करने के लिए मल्टीप्लेक्स की श्रंखलाएं अपने यहां फिल्मत देखने को सितारा होटलों का अनुभव बनाने की कोशिश कर रही हैं। वे सामान्य स्क्रीलन्से के अलावा चुनिंदा जगहों परसमझदार दर्शकों के लिये, बच्चों के लिये, इमर्सिव एक्सनपीरिएंस के लिये थियेटर के अलावा पैनोरेमिक व्यूइंग के लिये स्क्रीन भी उपलब्ध करा रहे हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि देश की एक प्रमुख मल्टी प्लेइक्स सिनेमाघरों की श्रंखला ने एक बड़ी रेडी–टू–ईट गौर्मेट ब्राण्ड के साथ भागीदारी की घोषणा की है जहां सिने दर्शक फिल्म देखते हुए व्यंजनों के स्वाद का भी मजा ले सकेंगे। बटलर–ऑन–कॉल की सुविधा के साथ माइक्रो–एडजस्टीबल लेदर रिक्लांइनर्स, सेलीब्रिटी शेफ के स्वादिष्ट व्यंजन उपलब्ध होंगे जिन्हें परोसने के लिए डिजाइनर यूनिफॉर्म पहना स्टाफ होगा। दूसरी तरफ वीडियो स्ट्रीमिंग सेवाएं फिल्मों और टीवी शो देखने के तरीके को बदल रहीं हैं। वीडियो स्ट्रीमिंग क्षेत्र मनोरंजन उद्योग का एक बहुत बड़ा हिस्सा बन गया है। अब लोगों के पास इतनी अधिक फ़िल्मों और वीडिओ श्रंखलाओं में से अपनी पसंद चुनने की सुविधा है कि वे अपने आप को भ्रमित महसूस करने लगे हैं। उनकी परेशानी यह भी है कि उन्हें अपनी इच्छित सामग्री पाने के लिए कई स्ट्रीमिंग सेवाओं पर जाना होता है। मुश्किल इस बात की नहीं हैं कि उन्हें मनचाहा कंटेंट पाने के लिए कई प्लेटफॉर्म पर जाना पड़ता है बल्कि मुश्किल यह है कि उन्हें अपनी मनचाही सामग्री प्राप्त करने के लिए ऐसे अनेक प्लेटफ़ॉर्म को भुगतान करना पड़ता है। नये आंकड़े बताते हैं कि स्ट्रीमिंग वीडियो बाजार में पैसे देकर ली जाने वाली सदस्यता वृद्धि अब धीमी होने लगी है। कई उपभोक्ता अब इसके बोझ का अनुभव कर रहे हैं और अपने खर्च के प्रति सावधानी बरतने लगे हैं। ऐसा दुनिया भर में हो रहा है और भारत के लोग तो मुप्त का चंदन घिसने वाली मानसिकता में सबसे आगे हैं। मगर एक अच्छी बात यह भी हुई है कि सारे स्ट्रीमिंग प्लेटफ़ॉर्म निजी निर्माताओं 'इंडीज़' को भी स्थान देते हैं जो एकल स्क्रीन के जमाने की फिल्म प्रदर्शन व्यवस्था में संभव नहीं होता था। स्ट्रीमिंग सेवाएं ग्राहकों को लुभाने के लिए इस समय एक–दूसरे से भारी प्रतिस्पर्धा में है ऐसे में मनोरंजन उद्योग में यह चर्चा भी चल पड़ी है कि सिनेमाघरों की श्रृंखलाओं पर इसका क्या असर होगा? क्या उनका धंधा तबाह हो जायेगा? यह निर्भर करेगा दर्शक महामारी के बाद कितने लोग सिनेमाघर में जाकर फिल्म देखने का अपना खोया विश्वास वापस बना पाते हैं। साथ ही उन पर किस तरह की फ़िल्में बन कर रिलीज़ होती हैं?

ओटीटी ने एक सहूलियत जरूर दी है कि कोई भी अब अपनी पसंद के समय और अपनी पसंद के स्थान पर अपनी पसंद की फिल्म जब चाहे देख सकता है। पहले सिनेमाघर के समय और वहां दिखाई जा रही फिल्म के अनुसार दर्शक को अपना कार्यक्रम बनाना पड़ता था। यही टीवी में था।

हालांकि अध्ययनों से पता चलता है कि बढ़ती संख्या में लोग अब सिनेमाघर जाकर फिल्म देखने की बजाय घर पर नई रिलीज़ फिल्में देखना पसंद कर रहे हैं किन्तु मनोरंजन उद्योग के प्रमुखों को अब इस बात की चिंता सताने लगी है कि उपलब्ध स्ट्रीमिंग सेवाओं की भारी संख्या के कारण उपभोक्ताओं में कहीं ऊब न पैदा हो जाए और वे उनसे किनारा करने लगें। स्ट्रीमिंग सेवा प्रदाताओं की नई समस्या यह भी है कि उनमें आपस में काफी समानताएं हैं, और वे वास्तव में अपनी एक दूसरे से अलग पहचान बनाने के लिए बहुत कुछ नहीं कर पा रहे हैं। मनोरंजन उद्योग के जानकार कहते हैं कि उन्हें नहीं पता कि अन्त:तोगत्वा कितने स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म अपनी खूबियों के आधार पर बचे रह सकेंगे क्योंकि उनसे ऊबे लोग अंतत:किसी नई चीज की अपेक्षा करने लगेंगे। ओटीटी ने एक सहूलियत जरूर दी है कि कोई भी अब अपनी पसंद के समय और अपनी पसंद के स्थान पर अपनी पसंद की फिल्म जब चाहे देख सकता है। पहले सिनेमाघर के समय और वहां दिखाई जा रही फिल्म के अनुसार दर्शक को अपना कार्यक्रम बनाना पड़ता था। यही टीवी में था। उसके समय के अनुसार दर्शक को अपना समय निकालना पड़ता था। सिने व्यवसाय पर नज़र रखने वालों का मानना है कि नियमित फिल्म देखने वाले तो सिनेमाघरों में लौट आयेंगे मगर कभी–कभार फिल्म देखने वालों का बड़े परदे वाले सिनेमाघरों में लौटना मुश्किल लगता है। यह सभी जानते हैं कि भव्यता लिए हुए फ़िल्में बड़े परदे पर अधिक मुफीद होती है। विराट फिल्म उद्योग ऐसी फिल्में बनाता है जो टीवी सेट के छोटे स्क्रीन की बजाय बड़े परदे पर अधिक आनंद देती हैं। इसलिए अनेक लोग कहते हैं कि जब तक फिल्में बनेंगी सिनेमाघर रहेंगे। लेकिन वे किस रूप में होंगे, कितने होंगे और उनमें किस तरह की फिल्में दिखाई जायेगी यह सब अभी भविष्य के गर्भ में है।

ऐसे लोग भी कम नहीं हैं जो ओटीटी के नकारात्मक पक्ष की बात करते हैं। वे पूछते हैं कि घंटों टीवी देखने या घंटों मोबाइल फोन को घूरते रहने के क्या परिणाम होंगे? यदि हर दिन इतने घंटे खर्च कर देंगे तो लोग ठोस काम कब करेंगे? क्या वे अंतत: मानसिक बीमारियों और बेरोजगारी के कुचक्र में नहीं फंस जाएंगे? मनुष्य के पास एक दिन में काम करने के केवल 12 घंटे होते हैं और जीवन आभासी नहीं वास्तविक होता है। अनेकों की चिंता मनोरंजन, रचनात्मकता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म पर परोसी जा रही सामग्री पर भी है। इन माध्यम के लिए बनाए जाने वाले तथा सीधे उन्हीं पर रिलीज़ होने वाले चलचित्र तथा वेब सीरीज में जिस प्रकार के अश्लील दृश्य और भाषा आ रही है उससे भी अनेक लोग असहज महसूस कर रहे हैं और आम जन में भी बेचैनी है। वेब सीरीज में नजदीक पारिवारिक रिश्तों के बीच यौन संबंधों को प्रमुखता से दिखाया जाना भी संस्कारी भारतीय परिवार के लिए अस्वीकार्य है। ओटीटी पर जो कुछ दिखाया जाता है वह बड़े परदे पर प्रदर्शित फिल्मों की तरह सेंसर बोर्ड के सामने जाकर नहीं आता जिससे उन पर कानून का नियंत्रण भी नहीं होता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

काजीजी का फरमान, अस्पताल पर 45 लाख का हर्जाना

सवेरे अखबार खोला। फरमान छपा था। अस्पताल पर 45 लाख का हर्जाना जिस अस्पताल के खिलाफ नालिश थी उसके वकील को निर्णय के बारे में कोई सूचना नहीं दी गई, कुछ नहीं बताया गया। अदालत ने फैसला सुरक्षित रखा था। एक शाम को मीडिया वालों को बतौर विज्ञिप्त दे दिया गया। खबर छप गई। फरमान जारी करने वाले जज साहिबान के नाम छपे। ऐसा लगा जैसे मीडिया हाउस के किसी ब्यूरो चीफ या स्पेशल कोरेसपोंडेन्ट की रिपोर्ट हो। और जैसा कि आजकल अखबारों की खबर का स्तर हो गया है, व्यूज अधिक न्यूज न्यूनतम। नेताओं के नाम विधिवत। अपना नाम अखबारों में देखने को लिए केवल नेता ही विख्यात नहीं हैं।

अदालत द्वारा दी गई खबर में रोगी को क्या रोग था? उसका क्या इलाज होना चाहिए था? क्या इलाज नहीं किया गया? या क्या गलत किया गया? इसका कोई विवरण नहीं। रोग की बारीकियों को समझना इतना सरल भी नहीं था। बच्चे को जन्मजात हर्सस्प्रिंग नामक विकृति थी। इस विकृति में बड़ी आंत के आखिरी भाग में वे कोशिकायें नहीं होती जो इस भाग के स्वाभाविक संकुचन का शमन कर इसे खोलती हैं। बड़ी आंत का मल जब यहां पहुंचता है तब यह भाग फैलता नहीं, संकुचित ही रहता है। फलस्वरूप गुदाद्वार नहीं खुलता और मल बड़ी आंत में जमा होता रहता है। इसका एक मात्र उपचार है बचपन में ही बायोप्सी द्वारा विकृत भाग का आकलन करना और उसे हटा कर बड़ी आंत के स्वस्थ भाग को गुदाद्वार से जोड़ना। जन्मजात व्याधि, जिटिल शल्य क्रिया। अभिभावकों को बताया गया इलाज नहीं करवाया। मल आंत में जमता गया, सूखता गया। पत्थर (फीकोलिथ) जैसा सख्त होता गया। भर्ती के समय एक्स रे को देख कर लगता था जैसे पेट नहीं, मल भरा सेप्टिक टैंक हो। सूखे मल के इस टैंक को एनिमा से खाली करना दूरूह था और बिना खाली किए मल भरी आंत पर कोई शल्यक्रिया करना असम्भव। बच्चे के लम्बे समय (नेग्लेट) से मल से आंत भरी होने के कारण पाचन प्रभावित, गंभीर मैलन्यूट्रिशन (कुपोषण) और सीवियर एनीमिया। एनिमिया से प्रभावित अन्य अंग, गिरी हुई प्रतिरोधोक क्षमता। कुल मिला कर हालत अति गंभीर।

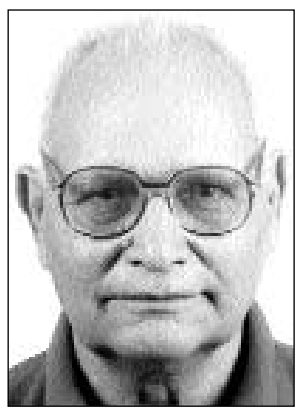
डॉ. श्रीगोपाल काबरा

सीवियर एनीमिया से उत्पन्न लाइफ थ्रेटनिंग गंभीर स्थिति को ठीक करने के लिए चिकित्सक ने अस्पताल से मांग कर 20 यूनिट रक्त चढाए। मरीज के अभिभावाकों ने एवज में एक भी रक्तदान करने से मना करने के बावजूद। एनीमा देकर सूखे मल से आंत खाली करने का प्रयास किया। वांछित सफलता नहीं मिली। मरीज की हालत गिरती गई। हालत अनुरूप हर संभव उपचार किये गया। फफड़ा म गभार सक्रमण हान पर वेन्टीलेटर पर भी रखा गया। लेकिन हालत गिरती गई और अंततः बच्चे की मौत हो गई। जज साहेबान ने यह नहीं बताया कि जो इलाज किया गया उसमें क्या गलत था। न ही इस जटिल अवस्था में किये गये उपचार का अन्य चिकित्सकों से आकलन करवाना जरूरी समझा। अपने चिकित्सकीय ज्ञान (?) के आधार पर विधिक जामा पहनाते हुए फरमान जारी कर दिया।

Hirschsprung's disease के केस में फरमान (निर्णय) में कहा गया आया है कि मरीज के सिर्फ कब्ज की बीमारी थी जो साधारणतया भारतवर्ष में काफी व्यक्तियों के पायी जाती है। पूरा मल विर्सजन नहीं होने पर वह पेट में जमा हो जाता है। इसके BEST चिकित्सा आयुर्वेद चिकित्सक होते है जो दवाईयों के जरिये मल निकाल देते है तथा पेट साफ कर देते है तथा यह मल ज्यादा जमा हो तो एनिमा लगाकर मल निकाल दिया जाता है।

फरमान में जारित निर्णय की ओर रजिस्टर्ड एलोपैथिक डॉक्टरों का ध्यानाकर्षित कर लेख है कि हर्षस्प्रंग नामक जन्मजात विकृति के रोगियों के लिए मल्टिपल बायोप्सी द्वरा अडायानामिक सेगमेंट को चिन्हित कर इलाज शल्यक्रिया से करने की गलती न करे। उन्हें आयुर्वेद वेत्ता हाकिम साहब के पास भिजवादे। वे उचित फरमान जारी कर मल निस्कासित करवा देंगें। एलोपेथिक चिकित्सक अपनी हटधर्मी कर 50 लाख की रिस्क न लें।

इस केस में कुपोषण जनित गंभीर एनीमियां (हिमोग्लोबिन 5.6) में किये गये उपचार के लिये फरमान में कहा गया है कि एनीमियां का इलाज आयरन व विटामिनस द्वारा किया जाना चाहिए था। मरीज को 20 यूनिट ब्लड प्रोडक्टस देने की आवश्यकता ही नही थी। जो एलोपैथिक विशेषज्ञ इससे सहमत न हो वे ऐसे रोगी को फरमान में निर्णित आदेश अनुरूप इलाज करवाने के लिए कहें। मरीज चाहे तो हाकिम साहब से सम्पर्क कर सकता है।

इस केस में हर चिकित्सकीय कर्म करने से पूर्व बालक के अभिभावको को उनकी स्वयं की भाषा में समझाकर उन्हीं के हस्ताक्षर से स्वीकृति (इलाज के लिए 5 बार) ली गई। माननीय जज साहेब ने फरमान – निर्णय – में कहा है कि यह मान भी लिया जावें कि लिखकर मरीज के पिता से हस्ताक्षर करवाये गये तो भी इसको लिखने की क्या जरूरत थी। चिकित्सकों का काम ईलाज करना था ना कि अपनी रिस्क से बचना। यह कागज पर लिखना ही विपक्षी के विरूद् जाता है तथा इसमें कुछ दाल मे काला नजर आता है।

''परिवादी से जो लिखकर लिया गया है परिवादी पढ़ा लिखा व्यक्ति नहीं है कुछ शब्द लिखे गये है जिससे परिवादी को तो क्या समान्य पढ़ा लिखा आदमी को भी जानकारी नहीं हो सकती। ऐसी स्थिति में जो परिवादी से लिखाया गया है वह सर्वथा फर्जी है। इससे पहले कि एलोपैथिक डाक्टर स्वीकृति लेना बंद करे या ऐसा फर्जीवाड़ा करना चालू रख जज साहेब के कोपभाजक बने, मेडिकल काउंसिल से गुजारिश है कि वह उच्चतम न्यायालय से इस बारे में स्पष्टीकरण लेले।

फर्जीवाड़ा कौन कर रहा है, यह तो समय या न्यायालय ही बतायेगें, लेकिन अगर विधि वेत्ता बतौर चिकित्सा विशेषज्ञ निर्णय लेंगे तो रोगयों की दुर्गति निश्चित है।

–डॉ. श्रीगोपाल काबरा
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

17 सालों से लोगों को पानी पिला रही हैं 80 वर्षीय संतोषी बाई

उदयपुर, (कासं)। भीषण गर्मी के दौर में तपती हुई धूप में राहगीर को शीतल जल मिल जाए तो उसे बड़ा सुकून मिलता है। इस उम्र में भी निस्वार्थ भाव से सेवा के इस पुनीत कार्य को अंजाम देने वाली संतोषी बाई प्यासों के लिए देवदूत बनी हुई है।

- **उदयपुर की संतोषी बाई भीषण गर्मी में प्यासों के लिए देवदूत बनी हुई हैं**

उदयपुर में फतहपुरा चौकी के समीप जल सेवा करती संतोषी बाई।

उदयपुर शहर के फतहपुरा चौकी के पास एक शीशम के पेड़ के नीचे संतोषी बाई पिछले 17 वर्षों से राहगीरों को पानी पिलाने का पुण्य काम कर रही है। शीतल पेयजल उपलब्ध कराने के लिए वे किसी राहगीर से कोई राशि भी नहीं मांगती है। स्वेच्छा से कोई कुछ दे जाए तो मना भी नहीं करती। कई लोग संतोषी बाई की इस जलसेवा से खुश होकर अपनी तरफ से कुछ राशि देकर इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित भी करते रहते हैं।

संतोषी बाई कहती हैं कि ईश्वर ने सब कुछ अच्छा किया, अब धन–दौलत का कोई मोह नहीं रहा। इसलिए तपती लू में राहगीरों की सेवा कर रही हूं। इससे पहले इनके पति भी इस क्षेत्र में पानी पिलाते थे।

80 साल की उम्र में वह छोटी सी बाल्टी में धीरे–धीरे चलकर पानी भरती हैं। उनके इस काम में एक बोहरा समाज के व्यक्ति इनकी मदद करते हैं। वो बाई को पानी भरने देते हैं, मटकियां रखने देते हैं और यदा–कदा अन्य मदद भी करते हैं। संतोषी बाई की जलसेवा के कार्य पर सामाजिक कार्यकर्ता सुनील पंडित कहते हैं, ताउम्र धन–दौलत के मोह में फंसे मानव जीवन में बुढ़ापे में मोह की कड़ी को तोड़ना आसान नहीं है लेकिन संतोषी बाई ने अपने नाम के अनुरूप जीवन में संतुष्टि को अनुभूत कर लिया है और एक–एक कर के मोह की तमाम कडियों को निकालकर फेंक दिया है।

मालाखेड़ा में पानी की किल्लत से गुस्साए ग्रामीणों ने हाइवे जाम किया

सड़क पर प्रदर्शन करते ग्रामीण।

अलवर, (निसं)। मालाखेड़ा में पानी की किल्लत से परेशान महिलाओं ने स्टेट हाइवे 44 पर जाम लगा दिया। इस दौरान महिला और पुरूषों ने पत्थर और कांटेदार बाड़ डालने से सड़क मार्ग अवरूद्ध हो गया। वहीं शादी के सावों के चलते बड़ी संख्या में वाहनों की कतार लग गई। जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत भडकोल मुख्यालय के लोगों में पेयजल संकट व्याप्त है।

घटना की सूचना पाकर मालाखेड़ा पुलिस और राजगढ़ पुलिस मौके पर पहुंची। इस दौरान स्थानीय प्रधान वीरवती भी मौके पर पहुंची। जहां मौके पर लोगों से समझाइश कर टैंकर से पानी की सप्लाई का आश्वासन दिया। सड़क जाम करने के दौरान स्थानीय लोगों ने बताया कि यहां पीने के लिए पानी की बूंद नहीं है, लोग महीनों से परेशान हैं। पंचायत और जलदाय विभाग की ओर से कोई व्यवस्था नहीं की जा रही है। इस दौरान प्रधान वीरवती ने कहा कि महाराजपुरा में नया बोरिंग लगवाया है। उसका कनेक्शन होना बाकी है। मंगलवार को विकास अधिकारी किसी कारणवश नहीं आए। बुधवार तक बिजली विभाग का मांग पत्र जमा कराकर कनेक्शन करवाया जाएगा। जिससे महाराजपुरा की पेयजल समस्या हल हो सकेगी।

आज भी खेतोलाई गांव के लोगों को परमाणु परीक्षण पर नाज है

पोकरण, (निसं)। पोकरण से 25 किलोमीटर दूर स्थित वह गांव जहां पर आज से ठीक 24 वर्ष पूर्व 11 मई 1998 को हुए परमाणु परीक्षण ने न केवल पोकरण बल्कि भारत देश को विश्व में परमाणु शक्ति के रूप में नई पहचान दिलाई। आज भी खेतोलाई गांव के लोगों को परमाणु परीक्षण पर नाज व फक्र है।

- **परमाणु परीक्षण की 24वीं वर्षगाठ, सिलसिलेवार हुए थे पांच धमाके**
- **उस ऐतिहासिक व गौरवान्वित मंजर को याद करते हुए ग्रामीण बताते हैं कि धमाके की आवाज से भूमि में थोड़ी हलचल हुई, लोगों को लगा की भूंकप आ गया, गांव के मवेशी इधर-उधर भागने लगे। कई मकानों की छतों पर दरारें आ गई**

परमाणु परीक्षण की घटना को बताते हुए ग्रामीण कहते हैं कि पोकरण फील्ड फायरिंग रेंज पास में ही स्थित होने के कारण यहां भारत सहित अन्य देशो की सेनाओं के युद्धाभ्यास होने के कारण धमाके होते रहते हैं। 11 मई 1998 को वो लम्हा आज भी लोगों के जहन में वीरगाथा के रूप में संजोया हुआ है। ग्रामीण बताते हैं कि उस दिन फायरिंग रेंज के अधिकारी व जवान गांव में पहुंचे। उन्होंने गांव के लोगों से कहा कि आज दोपहर से लेकर शाम तक मकानों के अंदर नहीं बैठे।

उस दिन गांव को सेना के जवानों ने चौतरफा घेर लिया। 11 मई 1998 के दिन सुबह से ही सेना के वाहनों द्वारा गांव में गश्त शुरू कर दी गई थी। जवानों द्वारा लोगों को बार–बार घरों से बाहर निकलकर सुरक्षित स्थानों पर जाने की अपील की जा रही थी। दोपहर के 3 बजकर 20 मिनट पर तेज धमाके की आवाज से गांव गूंज उठा। लोगों को लगा की कोई प्राकृतिक आपदा हुई है। इसी दौरान ग्रामीणों ने देखा फिल्ड फायरिंग की तरफ से आसमान में धुएं का विस्फोट हो रहा था। उस ऐतिहासिक व गौरवान्वित मंजर को याद करते हुए ग्रामीण बताते हैं कि धमाके की आवाज से भूमि में थोड़ी हलचल हुई। लोगों को लगा की भूंकप आ गया। गांव के मवेशी इधर–उधर भागने लगे। कई मकानों की छतों पर दरारें आ गई। तेज धमाके की आवाज के कुछ क्षणों बाद ही सेना के अधिकारी गाड़ियों के काफिले के साथ गांव से बाहर निकल गए। 11 मई 1998 को जब पोकरण स्थित फिल्ड फायरिंग रेंज में परमाणु परीक्षण हुआ उस समय डीआरडीओ के तत्कालीन निदेशक भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम थे। आम से लेकर सेना के अलावा किसी भी व्यक्ति को इस ऐतिहासिक होने वाले मंजर की जानकारी नहीं थी।

जैसे ही डॉ. कलाम के नेतृत्व में राजस्थान की इस वीर प्रसूता धरती पर परमाणु परीक्षण किया गया। उसके कुछ घंटों के बाद ही देश के तत्कालीन प्रधामनंत्री अटल बिहारी वाजपेयी व सेना के उच्चाधिकारियों ने एक संदेश के माध्यम से यह जानकारी लोगों तक पहुंचाई तो लोगों को मालूम हुआ। इसके बाद सेना के द्वारा 13 मई को और विस्फोट किए गए। इसी घटना ने पोकरण को परमाणु नगरी के रूप में विश्व पटल पर अंकित किया। पोकरण की सरजमीं से डॉ. कलाम व देश के पूर्व प्रधानमंत्री को इतना प्यार था कि वाजपेयी ने 19 मई 1998 को पोकरण में आयोजित एक कार्यक्रम में लोगों से रूबरू होकर इस ऐतिहासिक मंजर को साझा किया। उसी समय उन्होंने सेना, किसान व विज्ञान के क्षेत्र में जय जवान, जय किसान व जय विज्ञान का नारा दिया।

पोकरण भाजपा के नेता महंत प्रतापपुरी ने बताया कि पोकरण की ऐतिहासिक धरती पर मई 1998 में हुए परमाणु परीक्षण ने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। आज का दिन पोकरण व खेतोलाई गांव के साथ देशवासियों के लिए गर्व का दिन है।

नगरपालिका पोकरण के अध्यक्ष मनीष पुरोहित ने बताया कि पोकरण फील्ड फायरिंग रेंज में हुए परमाणु परीक्षण की आज हम 24वी वर्षगांठ मना रहे है। परीक्षण के बाद भारत देश को परमाणु शक्ति सम्पन्न देशों में सुमार होने में कामयाबी मिली।

> विस्फोट के बाद खेतोलाई गांव में सरकार की ओर से कोई ठोस प्रयास नहीं करने से यह गांव विकास की राह से कोसों दूर रह गया है। यहां के वांशिदों को आज भी सरकार द्वारा विकास कार्यों का इंजतार है।
>
> वहीं दूसरी ओर पोकरण शहर में परमाणु परीक्षण की वीर गाथाओं को हृदय में संजोने के लिए जैसलमेर रोड स्थित एक भवन में प्रशासन की ओर से शक्ति स्थल के नाम पर भवन में सेना के टैंकर, बंकर व युद्धाभ्यास के वाहनों के मॉडल बनाए गए थे। लेकिन यह स्थल भी समय के साथ प्रशासन के उदासीन रवैये से उजड़ गया है।
>
> आज इस स्थल पर ताले लगे हुए हैं। आज परमाणु परीक्षण की 24वीं वर्षगाठ भले ही लोगों के जहन में जरूर हो लेकिन शहर के इस स्थल पर कोई भी कार्यक्रम आयोजित नहीं होता।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 11 मई, 2022

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र सांय 7:28 तक, व्याघात योग सांय 7:24 तक, तैतिल करण प्रात: 7:28 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 1:33 पर कन्या राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मेष, चन्द्रमा–सिंह, मंगल–कुम्भ, बुध–वृष, गुरू–मीन, शुक्र–मीन, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। आज श्री महावीर स्वामी केवल्य ज्ञान (जैन) दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:04 तक, गुरू 10:44 से 12:23 तक, चर 3:42 से 5:21 तक, लाभ 5:21 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:46, सूर्यास्त 7:01

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर–परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
आर्थिक/वित्तीय मामलों में प्रगति होगी। धन प्राप्त होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

सिंह
व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बढ़ेगा।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी और आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

धनु
धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कुंभ
परिवार में प्रसन्नता–हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

मीन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बना रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना हेगा।